पं0 माखन लाल चतुर्वेदी : राष्ट्रीयता और हिन्दी

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

क्रांति के अमर गायक माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 ई0 में मध्य प्रदेश के बावई नाम स्थान पर हुआ था। इनके पिता नन्दलाल चतुर्वेदी अध्यापक थे। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बांग्ला, गुजराती और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया। तत्पश्चात खण्डवा से 'कर्मवीर' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। सन् 1913 में वे सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हुए। चतुर्वेदी जी 'एक भारतीय आत्मा' नाम से लेख, कविताएं लिखते रहे। इनकी कविताएं देश प्रेम के मतवाले युवकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं।

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण वे राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। इन्हें कई बार जेल यात्राएं भी करनी पड़ीं। जेल से छूटने पर सन् 1943 ई0 में ये हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए। हरिद्वार में महन्त शान्तानन्द की ओर से चांदी के रूपयों से इनका तुलादान किया गया। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मविभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। मध्य प्रदेश सरकार ने भी इन्हें पुरस्कृत किया। 80 वर्ष की आयु में 30 जनवरी 1968 ई0 को इस महान भारतीय आत्मा की वाणी सदा के लिए मौन हो गई।

माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक जीवन पत्रकारिता से प्रारम्भ हुआ। इनमें देशप्रेम की प्रबल भावना विद्यमान थी। अपने निजी संघर्षों, वेदनाओं और यातनाओं को इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया। 'कोकिल बोली' शीर्षक कविता में इनके बन्दी जीवन के समय प्राप्त यातनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। इनका सम्पूर्ण साहित्यिक जीवन राष्ट्रीय विचारधाराओं पर आधारित है। ये आजीवन देशप्रेम और राष्ट्र कल्याण के गीत गाते रहे। इनके राष्ट्रवादी भावनाओं पर आधारित काव्य में त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य–भावना और समर्पण के भाव निहित हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों को देखकर इनका अन्तर्मन ज्वालामुखी की तरह धधकता रहता था। अपनी कविताओं में प्रेरणा, हुंकार, प्रताड़ना, उद्‌बोधन और मनुहार के भावों को भरकर वे भारतीयों की सुप्त चेतना को जगाते रहे। भारतीय संस्कृति, प्रेम सौन्दर्य और आध्यात्मिकता पर भी इन्होंने अनेक हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किये हैं।

भारत में पत्रकारिता का आरम्भ एवं विकास स्वाधीनता आंदोलन के समान्तर विविध आयामी रूप से होता है। 1857 की घटना के बाद हिन्दुस्तानियों का झुकाव पत्रकारिता की ओर बढ़ने लगा तथा समाचार पत्रों की मांग बढ़ने लगी। अतः भारत में पत्रकारिता के मूल में राष्ट्रीय चेतना है। पत्र पत्रिकाएं ही जन संचार का माध्यम होती है। स्वाधीनता आन्दोलन में अपनी राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत ओजस्वी भाषा में बालगंगाधर तिलक, भारतेन्दु, प्रतापनरायण मिश्र ने जन मानस के बीच राष्ट्रभावना का संचार किया। इसके लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा। "भारतेन्दु द्वारा गुंजित स्वदेशी आन्दोलन को अन्य

पत्रकार भी उठाने लगे तत्कालीन पत्र ब्राह्मण के सम्पादक प्रतापनरायण मिश्र ने लिखा है कि हम और हमारे सहयोगी लिखते लिखते हार गये कि देशोन्नति करो, पर यहां वालों का सिद्धांत है कि अपना भला हो देश चाहे चूल्हे में जाय यद्यपि चूल्हे में जायेगा तो हम बचे न रहेंगे।"

तत्कालीन समय में पत्रकारिता द्वारा जागरूकता के साथ साथ हिन्दी भाषा निर्माण भी परिष्कृत हो रहा था। इस दृष्टि से गांधी युग का महत्वपूर्ण योगदान है। गांधी जी हिन्दी भाषा के हिमायती थे उनका मानना था कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकती है। जो कि तत्कालीन समय की सबसे बड़ी चुनौती थी। जिसे पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से सकारात्मकता प्रदान की गयी। यद्यपि पत्रकारिता का जन्म स्वाभाविक रूप से विकास विरोधिनी शक्तियों के गर्भ से हुआ है। निःसन्देह गांधी काल ने हिन्दी पत्रकारिता को एक यथार्थ मिश्रित आदर्श की जमीन प्रदान की। इस युग के अनेक राष्ट्रभक्त पत्रकारों का उदय हुआ जिन्होंने राष्ट्र का मार्गदर्शन किया। माखन लाल चतुर्वेदी भी ऐसे ही राष्ट्र समर्पित पत्रकार के रूप में उभरे।

माखनलाल चतुर्वेदी गांधी युग के सफल पत्रकार थे। वे राष्ट्र के प्रति समर्पित एवं तेजस्वी पत्रकार थे। उनकी राष्ट्रीय भावना से युक्त कविताएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने रचना काल में थीं। उनकी कविताएं, उनका लेखन आज भी भारतीय जनमानस को आजस्वी कर रहा है। माखन लाल चतुर्वेदी खण्डवा से प्रकाशित प्रभा पत्रिका के सह सम्पादक बनोय गये थे। इन्होंने प्रताप पत्रिका का भी सम्पादन किया था। परन्तु 1920 में चतुर्वेदी जी ने कर्मवीर साप्ताहिक पत्रिका का आरम्भ किया। चतुर्वेदी जी कर्मवीर के सम्पादक एवं मालिक दोनों थे। चतुर्वेदी जी एक प्रखर एवं तेजस्वी पत्रकार थे। उनका यह रूप कर्मवीर में लक्षित होता है। कर्मवीर के माध्यम से चतुर्वेदी जी ने अंग्रेजों के अत्याचार का निर्भीकता से विरोध किया। हण्टर कमेटी की नीयत शीर्षक से लिखी गयी उनकी टिप्पणी उनके साहस और निर्भीकता का उदाहरण द्रष्टव्य है। जो इन चिन्हों को देखेंगे, कहेंगे कि ये बम या गोलियां उत्तेजित भारतीयों ने चलायी पर बात ऐसी नहीं है। निहत्थे भारतीयों के पास न बम थे, न गोलियां ये अंग्रेज अमलदारों की करतूतें थी। अच्छा, यदि अंग्रेज अमलदारों के गोलियां बरसाने और बम चलाने के स्थान लिखे गये तो उन शीर्षकों को सामने अंग्रेजों द्वारा लिख देना चाहिए और साथ ही अंग्रेजों द्वारा किये गये, भद्र पुरूषों को पेट के बल रेंगना, सिर जमीन पर टिकवाना, औरतों को कोड़े से मारना, लोगों को नंगे करके मारना, कोमल विद्यार्थियों को जेठ की दुपहरी में 17 मील दौड़ना, नाक रगड़वाना और सिर्फ धाक जमाने के लिए विद्यार्थियों को कोड़े मारना आदि पाप काण्डों के स्थान भी दिखाए जाने चाहिए थे, पर वैसा नहीं किया।

माखन लाल चतुर्वेदी हिन्दी के ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। राष्ट्र के प्रति उनकी समर्पण की भावना अप्रतिम थी। वे निर्भीकता से अपने पथ पर डटे रहे। उनका सम्पूर्ण युवाओं के लिए प्रेरणादायक था वे आज ीाी हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। युवाओं और विशेषकर उनकी क्रांतिकारी धारा के प्रति उनका दिली लगाव था। वे चाहते थे कि उनका मार्गदर्शन कर सही रास्ते पर लाया जाय बजाय उनमें दोष निकालने के वे चातावनी देते हैं कि "हम गम्भीरता के नाम पर तरूणों के आत्माभिमान की उपेक्षा करते हैं और जि समय उन्हें मार्गदर्शन की जरूरत होती है, उन्हीं दिनों हम उनका मजाक उड़ाते हैं।" वे भविष्यदृष्टा थे, उन्हें भान था कि इन्हीं युवाओं के कंधे पर देश को आगे बढ़ाया जा सकता है। इसी कारण एक राह का निर्माण कर रहे थे, जो देश को स्वतंत्रता के बाद सही दिशा में ले चले। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीतिक दलों के

होड़ा–होड़ा से चतुर्वेदी जी दुःखी थे परन्तु सामाजिक सुधार के साथ जन आन्दोलनों के समर्थन का उनका स्वर पूर्ववत मुखर बना रहा। उन्होंने अपनी लेखनी से सत्ताधीशों को ललकारा और प्रज्ञा के हित के लिए समर्पित होने के लिए प्रेरित किया।

माखन लाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता में राष्ट्रीयता का सदैव प्रमुख स्थान रहा है। हमारे देश में जब पत्रकारिता का उदय हुआ उस समय स्वाधीनता का स्वर ही प्रबल रहा और आम जनता उन पर विश्वास करती थी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जिस स्वदेशी आन्दोलन की हवा चलाई उससे प्रभावित हो अन्य लेखकों ने आवाज उठाना शुरू कर दिया। और आवाज से आवाम में एक स्फूर्ति जाग्रत होती थी। परन्तु वर्तमान समय में जिस पत्रकारिता बनाम मीडिया से हमारा सम्पर्क हुआ है वह बाजारवाद की ओर बढ़ रही है। आज के युग में मीडिया का जनमानस पर इतना प्रभाव बढ़ गया है कि सरकार बनाने और गिराने में उसकी यह भूमिका बन गयी है। यही कारण है कि सब कुछ पेड हो गया है। पत्रकारिता आदर्श और यथार्थ का मध्य बिन्दु है। अतः दोनों में संतुलन बनाये रखने की आवश्यकता है। कभी कभी जो सच दिखाया जाता है वह असली सच नहीं होता है और हम दस सत्य के तह तक जाना है यह कार्य पत्रकारिता का है तथा निष्ठा और इमानदारी सबसे अहम है। चतुर्वेदी जी के लेखों में जो साहस और निर्भयता दृष्टिगोचर होती है उसकी आज बहुत आवश्यकता है।

स्वतंत्रता के पश्चात बंटवारे के कारण चतुर्वेदी जी का समाज के प्रति मोहभंग हुआ था पर फिर भी उन्होंने लिखा–

जीत हुई पर यह न दिखती जीत राज लेनेवालों की

इनकी सांस पर लिखी है प्रभुता राज लेनेवालों की

चतुर्वेदी जी की दृष्टि वैश्विक परिदृश्य पर भी समाज रूप से रहती थी। एशियाई देशों की एकजुटता और उनको स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। इससे सम्बन्धित तथा उनका समस्त लेख कर्मवीर में छपते थे। कर्मवीर के विषय में उन्होंने कहा कि कर्मवीर का क्षेत्र आवश्यक रूप से व्यापक था। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्रश्नों पर उसके सम्पादक का साधिकार लेखन पाठकों में जानकारी एवं उत्तेजना उत्पन्न करता था। टर्की प्रश्न का निपटारा, अफगान युद्ध, आयरलैण्ड का स्वराज्य, कानुन, रूस की क्रांन्ति, अफ्रीका का रंगभंग और गुलामों की खरीद, न्यूजीलैण्ड समस्याओं पर कर्मवीर का लेख आज भी कम प्रामाणिक नहीं है.....उनके कुछ प्रश्न चाहे पुराने हो गये हों। पर अभी भी जीवित है और जीवित रहना चाहते हैं।

पण्डित जी एक राष्ट्रभक्त थे वे चाहे एक पत्रकार हो, कवि हो लेखक हो, उनकी लेखनी में राष्ट्र के प्रति चिन्ता, समर्पण सदैव रहा। वे भारत को विश्व पटल पर रखकर देखते थे। वे अन्य देशों के साथ भारत के मैत्री सम्बन्धों पर जोर देते रहें। यद्यपि वे स्वतंत्रता से पूर्व ही स्वयं को राजनीति से दूर कर चुके थे परन्तु उनके हृदय में राष्ट के प्रति जो प्रेम था वह राजनीतिक ढ़ीलेपन को देखकर व्यग्र हो उठता था जो उनकी पत्रिकाओं में लेखों के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता रहा। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से सत्ताधीशों को चेताया कि वे अपनी राह सही कर लें चाहे स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश हुकुमत हो या फिर भारत सरकार। चतुर्वेदी जी निर्भीक पत्रकार थे। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत की फूट डालो और राजकरों की नीति का खुलासा कुछ इस तरह किया है। 'जब जब देश में राष्ट्रीयता की तीव्र लहर दौड़ने लगती है, तब तब सरकार उसे कुचलने के लिए कोई न कोई भेदनीतिक षडचन्त्र

रचने लगती है। भारत में हिन्दू मुसलमान दो ऐसी कौमे हैं जिनके सिर फुटव्वल से ब्रिटिश राजनीतिज्ञ समझते, भारत में ब्रिटिश शासन का फौलादी शिकंजा निर्विघ्नता से जमा रह सकता है।' इस तरह का साहस एक साहसी राष्ट्र भक्त ही कर सकता है। यद्यपि अंग्रेज चले गये परन्तु उनकी फूट डालो राज करो की नीति को भारतीय नेताओं ने जीवित रखा है। वे सत्ता के लालच में जातिवाद का विष फैला रहे हैं। अपनी राजनीतिक लाभ के लिए कुछ भी अनैतिक करने के लिए तत्पर हैं और पत्रकारिता आग में घी डालने का कार्य कर रही है। जिस पत्रकारिता के माध्यम से स्वाधीनता संग्राम का स्वर मुखरित हुआ था, लोगों में राष्ट्र प्रेम की भावना को जगाया था आज के युग की पत्रकारिता में उसका अभाव है, वर्तमान समय में स्वतंत्रता संग्राम के देशभक्त पत्रकारों, लेखकों, कवियों के नाम से बहुत विश्वविद्यालय, संस्थाएं खुल गये हैं, परन्तु उनके पदचिन्हों पर चलने वाले विरले ही हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी एक ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद 'भारतीय राजनीति में मूल्यों के क्षरण, आचरण में शुचिता और सादगी का विलोप सत्ता का सामांती सोच तथा लकदक और इन सबसे बढ़कर जनतंत्र में आम आदमी की उपेक्षा ने उनके विद्रोही मन को गहरे से प्रभावित किया और अपनी तेजस्वी लेखनी से वे इन बुराईयों पर चोट करते रहे' उन्होंने स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेजों के विरोध में जो बातें कही वे आज भी प्रासंगिक हैं। किसानों के विषय में कर्मवीर के 25 सितम्बर 1925 के अंक में वे लिखते हैं उसे नहीं मालूम कि धनिक तब तक जिंदा है राज्य तब तक कायम है ये सारी कौंसिले तब तक कायम है, तब तक वह अनाज उपजाता है और मालगुजारी देता है। जि दिन वह इंकार कर दे उस दिन समस्त सरकार में महाप्रलय मच जायेगा। उसे नहीं मालूम कि संसार का ज्ञान संसार के अधिकार और संसार की ताकत उससे किसने छीन कर रखी है। वह नहीं जानता कि जिस दिन वह अज्ञान इंकार कर उठेगा उस दिन ज्ञान के ठेकेदार स्कूल फिसल पड़ेंगे कालेज नष्ट हो जायेंगे और जिस दिन उसका खून चूसने के लिए न होगा, उस दिन देश में यह उजाला, यह चहल पहल, यह कोलाहल नहीं होगा। उनका यह कथन शत प्रतिशत सत्य है। आज भी स्वतंत्रता के 70 वर्षों बाद भी किसानों का यही हाल है। उन्हें सुनने वाला कोई नहीं परन्तु उनके नाम पर सभी राजनीतिक दल अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं और उन्हें दिग्भ्रमित कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में पत्रकार एवं पत्रकारिता की अहम भूमिका होती है कि वे अपने वक्तव्यों लेखों के माध्यम से जन मानस को सत्यता से परिचित कराये।

गणेश शंकर विद्यार्थी, बालगंगाधर तिलक सरीखे देशभक्तों से चतुर्वेदी जी बहुत प्रभावित थे। उन्होंने उनके पद चिन्हों पर ही अपने कदम बढ़ाये और राष्ट्रप्रेम की पराकाष्ठा पर पहुंचे। कर्मवीर के अपने पूरे सम्पादन काल में चतुर्वेदी जी ने पत्रकारिता का जो मानदण्ड स्थापित किया वह आज भी स्पृहणीय है। चतुर्वेदी जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को उनकी राष्ट्र प्रेम से युक्त पत्रकारिता को प्रभा कर्मवीर और प्रताप के सम्पादन के माध्यम से भलीभांति समझा जा सकता है। उन्होंने 11 अप्रैल 1925 को जब खंडवा से कर्मवीर का पुनः प्रकाशन किया तब उनका आवाहन था, आइये गरीब और अमीर किसान और मजदूर उच्च और नीच, जित और पराजित के भेदों को ठुकराइए, प्रदेश में राष्ट्रीय ज्वाला जगाइए और देश तथा संसार के सामने अपनी शक्तियों को ऐसा प्रमाणित कीजिए, जिसका आने वाली संतानें स्वतंत्र भारत के रूप में गर्व करे। उनका राष्ट्रप्रेम उनके समस्त लेखन में दृष्टिगत है। उनका राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना का जनमानस को ओजस्विता से सराबोर करने वाली उनकी पुष्प की अभिलाषा कविता से कोई बिरला ही भारतीय होगा जो परिचित नहीं होगा।

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं, प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि, डाला जाऊं
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली! उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पर जावें वीर अनेक।

संदर्भ

- ✓ हिन्दी पत्रकारिता : आधुनिक सन्दर्भ, डा. देवप्रकाश मिश्र पृ.सं.23 स्वराज प्रकाशन
- ✓ हिन्दी पत्रकारिता : आधुनिक सन्दर्भ, डा. देवप्रकाश मिश्र पृ.सं.30 स्वराज प्रकाशन
- ✓ माखन लाल चतुर्वेदी रचनावली, श्रीकान्त जोशी खण्ड 9 पृ. 164, वाणी प्रकाशन
- ✓ माखन लाल चतुर्वेदी रचनावली, श्रीकान्त जोशी खण्ड 10 पृ. 132, वाणी प्रकाशन
- ✓ कर्मवीर 8 मार्च 1941
- ✓ माखन लाल चतुर्वेदी रचनावली, श्री कान्त जोशी खण्ड 9 प्राक्कथन
- ✓ कर्मवीर 3 अक्टूबर 1929
- ✓ हिन्दी के युग निर्माता माखन लाल चतुर्वेदी डा. शिवकुमार अवस्थी पृ.सं. 79 प्रभात प्रकाशन
- ✓ हिन्दी का गद्य साहित्य, डा. रामचन्द्र तिवारी पृ.सं. 616 विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- ✓ माखन लाल चतुर्वेदी भारतीय आत्मा, विजय दत्त श्रीधर बेब दुनिया
- ✓ पत्रकारिता के युग निर्माता माखन लाल चतुर्वेदी, डा. शिव कुमार अवस्थी पृ.सं. 79 प्रभात प्रकाशन

Copyright © 2014, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.